पाठ 8. बालक का साहस

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को स्वतंत्रता सेनानी तथा 'लौह पुरुष' के नाम से प्रसिद्ध सरदार वल्लभभाई पटेल के बारे में जानकारी देना है। यह पाठ वल्लभभाई पटेल के बचपन से जुड़ी एक घटना बता रहा है।

पाठ का सारांश

गुजरात में नादियाड नाम का एक गाँव है। उस गाँव में पाठशाला न होने के कारण वहाँ के बच्चे दूसरे गाँव की पाठशाला में पढ़ने जाते थे। एक दिन पाठशाला जाते समय रास्ते में पड़े एक बड़े से पत्थर से एक बालक के पैर में चोट लग गई। उस बालक ने सोचा मेरी तरह कोई और इससे घायल न हो जाए इसलिए मैं इसे रास्ते से हटा देता हूँ।

बालक के बहुत प्रयत्न करने पर भी पत्थर हिल नहीं रहा था। परंतु बालक प्रयत्न करता रहा और अंत में उसे सफलता मिल ही गई। बालक ने उस पत्थर को हटाकर सड़क के किनारे रख दिया। दूसरों के कष्ट की चिंता करने वाला वह बालक था–सरदार वल्लभभाई पटेल। उनके दृढ़ व्यक्तित्व के कारण उन्हें 'लौह पुरुष' के नाम से जाना जाता है।

अध्यापन संकेत

पाठ वाचन से पूर्व बच्चों से सरदार वल्लभभाई पटेल के बारे में चर्चा करें। उन्हें बताएँ कि वल्लभभाई पटेल प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी थे। उनका व्यक्तित्व बहुत ही प्रभावशाली था। उनके दृढ़-निश्चयी व्यक्तित्व तथा कभी हार न मानने वाले स्वभाव के कारण उन्हें 'लौह पुरुष' कहा जाने लगा। पाठ का वाचन करें।

- ❖ बताएँ, विद्यालय या स्कूल को ही पाठशाला कहते हैं।
- ❖ समझाएँ कि किसी की सहायता करना अच्छी बात होती है।

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।